बिहार विधान मंडल में मगही

विधान परिषद में मगही (10.12.1974)

सबसे पहिले 10.12.1974 के बिहार विधान परिषद् में मगही भासा के राज्य के प्रादेसिक भासा के मान्यता देके इस्कूल से वि० वि० स्तर तक पाठ्यक्रम में सामिल करेके सम्बन्ध में श्री राम ईश्वर सिंह सदस्य विधान परिषद के गैर-सरकारी परस्ताव आयल।

एकरा पर बहस होल जेकरा में श्री जागेश्वर मंडल, अध्यासीन सदस्य (श्री अरुण कुमार), श्री माहेश्वरी सिंह 'महेश', श्री राम लखन पाण्डे आदि भाग लेलन जेकरा में श्री अरुण कुमार के बहस परस्ताव के पच्छ में जादे सकारात्मक हल।

14.2.1975 के फिनो ई परस्ताव विधान परिसद् में आयल। बहस में श्री रामसुंदर तिवारी, श्री माहेश्वरी सिंह 'महेश', श्री दिवाकर प्रसाद सिंह, अध्यासीन सदस्य (डा० उमेश्वर प्रसाद सिंह), श्री राज कुमार महासेठ, श्री वृन्दा प्रसाद राय, 'वीरेन्द्र' श्री अरुण कुमार, श्री पद्मदेव नारायण शर्मा, श्री उमेश प्रसाद सिंह, श्री कैलाश सिंह, श्रीराम विलास शर्मा, श्री वसी अहमद, श्री वैद्यनाथ पांडेय आउ डॉ० रामराज प्रसाद सिंह (मंत्री) भाग लेलन। जेकरा में श्री वृन्दा प्रसाद राय 'वीरेन्द्र', श्री अरुण कुमार, श्री पद्मदेव नारायण शर्मा, डॉ० उमेश्वर प्रसाद वर्मा, श्री माहेश्वरी सिंह, 'महेश', श्री उमेश प्रसाद सिंह, श्री राम विलास शर्मा मगही के पच्छ में जमके बोललन। श्री पद्म नारायण शर्मा आउ श्री राम विलास शर्मा अप्पन जादेतर विचार मगही भासा में परस्तुत करलन। सेस लोग हिन्दी में बोललन।

माननीय सदस्य लोग के मूल भावना के खेयाल रखित संच्छेप में बहस के मगही अनुवाद इहाँ परस्तुत करल जा रहल हे।

श्री राम सुंदर तिवारी : ऊ दिन माननीय सदस्य श्री रामईश्वर सिंह के भासन अधूरा रह गेल हल। आज ऊ फिन मगही भासा के बारे में बोलतन। हम चाहब कि मगही में ही बोलथ।

अध्यासीन सदस्य (डॉ० उमेश्वर प्रसाद वर्मा) : ई प्वाइंट ऑफ आर्डर न हो सकऽ हे। सुझाव भले होय।

श्री राम सुंदर तिवारी : तऽ सुझाव ही मानल जाए।

श्री रामईश्वर सिंह : महोदय। हम इनकर सुझाव के रिजेक्ट करऽ ही। हमरा पास अभी मगही भासा के कुछ पुस्तक हे, इनकरा अवलोकन करेला हम माननीय सदस्य के देवऽ ही। सउँसे हिन्दुस्तान के राजभासा हिन्दी हे। एकर अलावे संविधान में प्रावधान करल गेल हे कि क्षेत्रीय भासाके जिनकर मान्यता हे उनको स्थान देवल जाए।

श्री माहेश्वरी सिंह 'महेशू' : कउन संविधान में हे ?

श्री रामईश्वर सिंह : हम तो केवल एक्के संविधान के जानऽ ही। हो सकऽ हे कि अपने के जानकारी में बहुत-सा संविधान होय। प्राइमरी एडुकेसन बच्चा के ओकर मदर टंग में होवत, एकर बेवस्था संविधान में हे।

श्री दिवाकर प्रसाद सिंह : हम्मर प्वायंट ऑफ आर्डर हे। माननीय सदस्य बतलावथ कि मैथिली भासा के जिकिर संविधान के कउन अनुच्छेद में हे ?

अध्यासीन सदस्य (डॉ० उमेश्वर प्रसाद सिंह) : ई प्वायंट ऑफ आर्डर नयँ हे।

श्री रामईश्वर सिंह : संविधान में कहाँ-कहाँ पर का हे, ई सब कहना एतना कम समय में संभव नयँ हे। संविधान में बेवस्था हे कि बच्चा अप्पन मदर टंग में ग्यानार्जन करे। उर्दू भासी बच्चा ला ई बेवस्था हे, मैथिली भासी बच्चा ला ई बेवस्था हे। हम तो एकरा सिरिफ इक्सटेन्सन चाहऽही।

श्री राज कुमार महासेठ : बिहार में मैथिली भासा के विस्तार चाहऽ ही।

श्री रामईश्वर सिंह : मदरटंग में सिच्छा प्राप्त करना दूसर क्षेत्र के बच्चा के भी मौलिक अधिकार हे, उनका एकरा से वंचित न करल जाए। मैथिली सब्भे वि० वि० में वि० वि० स्तर तक पढावल जा रहल हे। बिहार वि० वि० में वि० वि० स्तर तक भोजपुरी के पढ़ाई चल रहल हे। मगध के बिसाल जनसमूह उपेच्छित महसूस कर रहल हे। मैथिली भासा आउ साहित्य बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित परिच्छा में ऐच्छिक विसय के रूप में हे जेकर अर्थ होल कि मैथिली एरिया के लोग ऊँचा नौकरी में जादे से जादे सुविधा प्राप्त कर सकथ। जइसे मैथिली, भोजपुरी के अधिकार मिलल हे, ओइसहीं मगही के भी अधिकार मिले के चाही।

अध्यच्छ महोदय मगही के भी बिहार लोक सेवा आयोग में ऐच्छिक विसय बनावल जाए। मगही पुरातन काल से मगध के भासा चलल आ रहल हे। ई पुराना

काल में संस्कृत आउ प्राकृत काल में मागधी आउ अर्द्धमागधी के रूप में विद्यमान हल। कालिदास आउ व्यास जइसन संस्कृत के नाटक में एकर रचना के जिकिर हे। बौद्ध धरम के सब्भे साहित्य मगही में ही हे। भगवान बुद्ध अप्पन सिच्छा मगध के ग्रामीन भासा पाली-मगही में देलन आउ प्राचीन बौद्ध साहित्य तत्कालीन मागधी में ही हे। एही प्रकार प्राचीन जैन-धरम के साहित्य भी मागधी में ही हे आउ अशोक के सिलालेख भी मागधी में ही हे। मगही के इतिहास कम-से-कम 1500 बरिस पुराना हे। जइसे अँगरेजी में Old English, Medieval English आउ Modern English Period आवऽ हे ओइसहीं मगही में भी रूप परिवर्तन भेल हे। अध्यक्ष महोदय हम चाहऽ ही कि मैथिली, भोजपुरी नियर मगही भासा के भी मान्यता देवल जाए।

श्री वृन्दा प्रसाद राय 'वीरेन्द्र' : हम ई परस्ताव के समर्थन करऽ ही आउ सरकार से अनुरोध करऽ ही कि जब नया सिलेबस ड्राफ्ट हो रहल हे आउ थ्री लैंग्वेज फर्मूला सरकार के कार्यान्वित करना हे तऽ बिहार के लोक भासा के भी मउका देवल जाए। जेकर चलते इनकर विकास हो सके।

श्री अरुण कुमार : हम ई परस्ताव के समर्थन करऽ ही। लोग अप्पन घर में तो मगहिए, भोजपुरी, मैथिली में बोलऽ हथ। हमनी क्षेत्रीय भासा के कवि के हिन्दी के कवि घोसित कर देली। सूरदास ब्रजभासा के कवि न होके हिन्दी के कवि हो गेलन। तुलसीदास अवधी के कवि न होके हिन्दी के कवि हो गेलन। कबीर भोजपुरी के कवि न होके हिन्दी के कवि हो गेलन। विद्यापति मैथिली के कवि न होके हिन्दी के कवि हो गेलन। अगर हमनी क्षेत्रीय बोली, भासा के सुरच्छित रखना चाहऽ ही तऽ इनका पाठ्यक्रम में स्थान देवल जाए। सरह मगही के आदी कवि हलन। 1950 के एकंगरसराय के मगही सम्मेलन के बाद मगही काफी उन्नत्ति कैलक हे। मगही में एतना क्षमता हे कि ओकरा पाठ्यक्रम में रक्खल जाए। जउन क्षेत्रीय भासा के अप्पन साहित्य हे उनका पाठ्यक्रम में सामिल करल जाए।

"निज भासा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भासा ग्यान के मिटे न हिय को सूल।"

श्री पद्म नारायण शर्मा : सभापति जी, हम राम ईश्वर सिंह के धन्यवाद देवल चाह रहली हे कि अइसन परस्ताव ऊ लइलन हे। अइसे तो हम भोजपुरी बोलेवाला ही, बाकि हम्मर पत्नी मैथिली बोलइ छइ, हम्मर माय मगही बोलऽ हइ। हम मैथिली के विरोध न करऽ ही आउ न हम मगही के समर्थन से इनकार कर सकऽ ही। हम न जानऽ हली कि मगही भासा एतना धनी भासा हे।

श्री कैलास सिंह : अध्यच्छ महोदय, का मगही में बोले के इजाजत हे ?

अध्यासीन सदस्य (डॉ० उमेश्वर प्रसाद वर्मा)—बोले दी।

डॉ० दिवाकर प्रसाद सिंह : हम माननीय सदस्य के भावना के आदर करऽ ही बाकि का ई सदन के भासा हे ? ई हम्मर प्वाइंट ऑफ आर्डर हे।

श्री पद्म नारायण शर्मा : (मूल रूप)— बड़ा दुख के बात होल कि जब लोग अँगरेजी में बोलऽ हल तऽ कोई न विरोध करऽ हल लेकिन जब हम अप्पन देस के भासा बोलऽ ही तऽ कैलाश बाबू अइसन बुजुर्ग अदमी एकर विरोध करऽ हथ। अपने जउना कुर्सी पर बइठल ही ओही कुर्सी से केतना लोग अँगरेजी में बहुत देर तक परवचन दिहलन, तऽ ओकर कोई न विरोध करलन। अध्यक्ष महोदय, जेकर जे भासा हे ऊ भासा यदि ऊ बोलऽ हथ तऽ एकर विरोध न करेके चाही। श्री राम ईश्वर बाबू के बड़ा सुंदर अभिस्ताव हे। अरुण बाबू बड़ा जोरदार समर्थन कैलन हे। हम ओकरा समर्थन करऽ ही आउ आसा करऽ ही बगैर वाद-विवाद के सदन एकरा स्वीकर कर लेवत।

श्री माहेश्वरी सिंह महेश : अध्यच्छ महोदय हम ई परस्ताव के समर्थन करऽ ही, ई जमाना के तकाजा हे कि बच्चा के ई तरह से सिखलावल जाए कि आगे चलके उनका साथ न्याय हो सके। ई न हिन्दी के विरोध हे न मैथिली के, न अँगरेजी के। हम सिच्छा मंत्री आउ सरकार से अपील करऽ ही कि एकरा अविलम्ब लागू करल जाए।

डॉ० दिवाकर प्रसाद सिंह : अध्यासीन सदस्य महोदय, जउन रूप में सदन के समच्छ ई अभिस्ताव पेस करल गेल हे आउ दूसर माननीय सदस्य समर्थन कैलन हे, हम उनकर भावना के सम्मान करऽ ही। परन्तु हम्मर दावा लोगिन के समान नयँ हे। हम अनुभव करऽ ही कि बिहार के सिच्छा मंत्री पर आउ सिच्छा विभाग पर सिच्छा के संबंध नें स्वयं नीति निर्धारन करेके उत्तरदायित्व हे। ई भावना से ऊपर उठके जे बड़ा-बड़ा कर्त्तव्य हे—रास्ट्रीयता के भावना के धेयान में रखके काम करेके चाही। माननीय रामईश्वर सिंह, इतिहास, भूगोल के काफी तोड़-मरोड़ के सदन के समच्छ उपस्थित करलन हे कि भासा के संबंध में मगही के बहुत बड़ा देन हे। जब बच्चा के पाठ्यक्रम के बात होवऽ हे तऽ ओकर एगो मानदंड होवे के चाही। सब्भे क्षेत्रीय भासा के अवलोकन करल जाए, एगो अलग अन्वेसन संस्थान

के स्थापना करल जाए। जब मैथिली के लोक सेवा आयोग में रक्खल गेल हल तऽ हम एकर विरोध कैली हल काहे कि ई वेटेज दूसर क्षेत्र के नयँ मिलऽ हल।

अध्यासीन सदस्य : माननीय सदस्य के समय खतम हो गेल हे।

श्री दिवाकर प्रसाद सिंह : वि० वि० सिच्छा ला ई विसय रहे इया नयँ, ई पर अन्वेसन होय, एकरा ला इन्स्टीट्यूट के स्थापना होय।

श्री अरुण कुमार : अध्यच्छ महोदय, ई भासा आसाम के निचला भाग से लेके सउँसे पटना, गया, भागलपुर आदि जिला में बोलल जा हे।

श्री दिवाकर प्रसाद सिंह : Census के समय मगही बोलेवाला लोग भी कहऽ हलन कि हम्मर मातृभासा हिन्दी हे। ई से पता चलऽ हे कि उनका में रास्ट्रीयता के भावना केतना हे। बच्चा हिन्दी भी पढ़ सकऽ हे। उनका पर जादे बोझ लादना ठीक नयँ। ई भासा के कउनो क्षेत्र पर इया कउनो बच्चा पर लादना ठीक नयँ होवत।

ई भासा के जहाँ तक अध्यच्छ महोदय, हम्मर जानकारी हे, कउनो दैनिक इया मासिक समाचार पत्र नयँ हे। उच्च मानदंड के कउनो अइसन पतरिका ई भासा के न हे। मैथिली के लागू करे में सरकार से गलती होल अब दूसर गलती सरकार काहे करत ? अब एकरा लादल न जाए बलुक क्षेत्रीय भासा के सम्बंध में अन्वेसन होय।

श्री उमेश प्रसाद सिंह : अध्यच्छ महोदय मगही भासा के एगो खूबी हे मगही भासा के द्वारा, झूठ बोलना इया असत्य बात कहना संभव न हे। एकरा में केवल सत्य ही बोलल जा सकऽ हे। कउनो बात सीधा तरह से आउ एक्के तरह से कहल जा हे। ई भासा में जबरदस्त मिठास हे। सरकार संस्थान इया बोर्ड के स्थापना करे सब क्षेत्रीय भासा के विकास ला बाकि अभी हम मगही भासा के संबंध में आयल परस्ताव के समर्थन करऽ ही। एही बरिस से सरकार एकरा पाठ्यक्रम में स्थान दिलावे के बेवस्था करे।

श्री राम विलास शर्मा : सभापति जी, ई परस्ताव के हम समर्थन करऽ ही। माननीय सदस्य श्री दिवाकर प्रसाद सिंह कह रहलन हल कि मगही भासा में जे पतरिका निकलल हे ओकर स्टैण्डर्ड केत्ता पुअर हे। हम सरकार से चाहऽ ही कि पहले ई भासा के सरकार अपनावे, मान्यता देवे, कुछ खर्च करे तब देखे कि कउन तरह एकर वृद्धि हो हे, विकास होवऽ हे। अनुभव बतलावऽ हे कि मास एजुकेसन

में सफलता अधिक मिलऽ हे अगर क्षेत्रीय भासा में सिच्छा देवे के बेवस्था होय। माननीय दिवाकर बाबू के आसंका निर्मूल हे कि मगही भासा के चलते हिन्दी पर आँच आवत। अपने मगही के प्राइमरी स्टेज पर इन्ट्रोड्यूस करके देखीं। ओकरा बाद सेकण्डरी, यूनिवर्सिटी तक एकरा लागू करे के विचार रखूँ। सिन्डीकेट, सिनेट आउ यूनिवर्सिटी पर अपने के पूरा अधिकार हइहे हे। अपने घरे जायम तऽ अपने भासा में पूछम कि खाना तइयार हे कि नयँ।

श्री कैलास सिंह : महोदय, अभी जे परस्ताव सदन के समच्छ आयल हे हम ओकरा समर्थन करऽ ही। हम चाहब कि हिन्दी जे हम्मर मुख्य भासा हे अप्पन जगह पर रहे। क्षेत्रोय भासा भी विकसित होवे बाकि कहीं ई बढ़ते-बढ़ते एतना न बढ़ जाए कि बाद में आत्मघाती साबित होय। हम मागधी के विरोध नयँ करऽ ही, बाकि ई बीमारी कहूँ बढ़के हम्मर एकता में बाधा न पहुँचा दे। अध्यच्छ महोदय, हम एही चार सबद के साथ एकरा समर्थन करऽ ही।

श्री वसी अहमद : मूल रूप से परस्ताव के समर्थन करित कुछ बात दन्ने सरकार के धेयान आकृस्ट करना चाहऽ ही। एकर बोलेवाला के भी संख्या जादे हे। बाकि बोली इया भासा जे पूरा तरह से विकसित न हो सकल हे, ओकरा पर एतने कार्यभार देवल जाए कि ऊ सहन कर सके। सरकार मगही के विकास ला जोजना बनावे। एही सबद के साथ हम ई परस्ताव के मूल स्पिरिट के समर्थन करऽ ही।

श्री वैद्यनाथ पाण्डेय : अध्यच्छ महोदय, हम चाहऽ ही कि सरकार या तो मैथिली भासा के हटा दे या फिन एक्के आदेस में आउ एक्के दिन में बिहार के सब्भे भासा ला कोई एगो बेवस्था करे ताकि आज जइसन मगही के समस्या आयल हे, ओइसन फिन कोई अन्य समस्या इहाँ खड़ा न हो जाए। ई से सरकार से हम्मर अनुरोध हे कि सरकार एगो कमीसन बनावे जे सब्भे भासा के कोई एगो समाधान निकाले।

अध्यासीन सदस्य (डॉ० उमेश्वर प्रसाद वर्मा) : दो आउ गैर-सरकारी संकल्प हे। ई संबंध में सदन के राय जानना चाहब।

श्री रामईश्वर सिंह, स.वि.प. के मगही भासा के राज्य के प्रादेसिक भासा के मान्यता देके इस्कूल से वि०वि० स्तर तक के पाठ्यक्रम में सामिल करे के संबंध में गैर-सरकारी संकल्प।

अध्यासीन सदस्य (डा० उमेश्वर प्रसाद वर्मा) : परिसद् के कार्यवाही सुरू होवऽ हे। श्री रामईश्वर सिंह के संकल्प पर सरकार के उत्तर बाकी हे। ऊ पहिले होवत।

डॉ० रामराज प्रसाद सिंह (मंत्री) : अध्यासीन सदस्य महोदय, माननीय सदस्यन द्वारा मगही भासा के राज्य के प्रादेसिक भासा के मान्यता देके इस्कूल से वि०वि० स्तर तक के पाठ्यक्रम में सामिल करे संबंधी परस्ताव आउ व्यक्त करल गेल विचार के आदर करित भी सरकार के ई निस्चित अभिमत हे कि क्षेत्रीय भासा के साथ-साथ राज्य के अन्य बोल-चाल के भासा, चाहे उनकर पूर्व के प्राचीन इतिहास केतना भी गौरवमय काहे न रहल होय, आज ऊ मात्र बोलचाल के भासा के सदृस रह गेल हे। आउ ऊ सब के सुसंस्कृत रूप आज रास्ट्र भासा के रूप में हिन्दी हे। बोल-चाल के भासा के हिन्दी के समकच्छता परदान करे से क्षेत्रीय Loyality के जनम देवत आउ रास्ट्रीय एकता ला घातक होवत। प्रा. स्तर से वि०वि० स्तर तक मगही भासा के पाठ्यक्रम में सामिल करे से छात्र के ऊपर भासा के पढ़ाई के बोझ भी अधिक पड़त। जे विद्यार्थी ला घातक होवत। अँगरेजी के चलते बिहार के छात्र अखिल भारतीय परिच्छा में अच्छा न कर पावथ। क्षेत्रीय भासा में सिच्छा में बेवस्था होला पर उपलब्धि में आउ भी गिरावट होवे के आसंका हे। ई से अभी मगही के इस्कूल से वि०वि० तक पाठ्यक्रम में लाना संभव नयँ हे। अलग से मान्यता देना उचित जान न पड़े। मगही भासा पर सोध कार्य के परस्ताव के हम आदर करऽ ही। सरकार एकरा पर विचार करत। अभी मगही के पाठ्यक्रम में लागू करे के समय उपयुक्त नयँ हे, अत: माननीय सदस्य से अनुरोध करम कि ऊ ई परस्ताव के वापस लेवे के कृपा करथ।

श्री रामईश्वर सिंह : अध्यच्छ महोदय, माननीय मंत्री मगही भासा-भासी होवे के चलते सब्भे भासन के गरहन कइलन होत। उनका कहना हे कि मगही के लागू करे से लइकन पर बोझ बढ़ जायत। लेकिन बड़ी अदब के साथ हम पूछना चाहऽ ही कि ऊ दिन ई सरकार कहाँ हल जब मैथिली भासा-भासी बच्चा ला प्राइमरी में मैथिली के सिच्छा देवे के बेवस्था करल गेल हल। वि०वि० में आउ बिहार के सब्भे क्षेत्र के कॉलेज में मैथिली भासा के पठन-पाठन के बेवस्था करल गेल। एकरा अलावे बिहार के लोक सेवा आयोग एकरा ऐच्छिक विसय के रूप में मान्यता देलक। ऊ घड़ी का विद्यार्थी पर बोझ न पड़ल हल जबकि आज मगही भासा के

सबध में बोझ पड़ेके बात कहल जा रहल हे। भोजपुरी के भी बिहार वि०वि० में मान्यता देवल गेल हे। अप्पन घर के ही लोग जब ई तरह के बात करऽ हथ तऽ बड़ी अदब के साथ माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहब कि अगर ई भासा के मान्यता दिलावे के कोई बेवस्था ऊ न करयतन तऽ उनका मगही क्षेत्र से बाहर जाए पड़त। हम ई परस्ताव के वापस नयँ लेवम। सिच्छा के सवाल आउ सिच्छन सुविधा के सारा सवाल के धेयान में रखके हम ई परस्ताव के सदन में रखली हे। पहिले माननीय मंत्री सदन में अभी जे कहलन ओकर पहिले ऊ नलीफाई करथ आउ जउन परकार के स्थान भोजपुरी के देलन हे, मैथिली के देलन हे ओही परकार के स्थान मगही के ऊ देथ। जइसन माननीय मंत्री के विभाग के विद्वान लोग Courses of Study बनावऽ हथ ओइसने Courses of Study हम सदन के सामने पिछला बार रखली हल ताकि ओकरा से कुछ सुविधा आउ लाभ ई संबंध में माननीय मंत्री के मिल सके। बाकि अइसन लगऽ हे कि ऐकरा ओर ऊ धेयान न देलन आउ ओकर से लाभ प्राप्त करे के कोई कोसिस नयँ करलन। अगर एकर विकास न होयल तऽ मगही मैथिली, भोजपुरी से पीछे पड़ जायत। अगर हम्मर देवल Courses of Study वि०वि० स्तर के कउन कहे, इस्कूल ला भी पर्याप्त न मालूम पड़े तब अउर अधिक का कहल जा सकऽ हे। हम माननीय मंत्री से आग्रह करब कि ऊ फिन से विचार करके कोई निस्चित निरनय लेवथ।

श्री रामविलास शर्मा : अध्यच्छ महोदय, ई विसय सिच्छा मन्त्री ला बहुत ही गंभीर हे, काहे कि इनकर भासन चुनाव के समय छपवा के बँटवावल जा सकऽ हे।

डॉ० रामराज प्रसाद सिंह (मंत्री) : अध्यच्छ महोदय, मगध के इतिहास के एगो गरिमा हे। ई कतई उचित न होवत कि हमनी एगो छोटा दायरा में आ जाई। मगध के सेना जब चलल तऽ ऊ बढ़ित अफगानिस्तान तक चल गेल। ओइसन स्थिति में अगर मगध के लोग ई प्रकार के छोटहन बात के सोचथ कि हम ई बोली बोलम, ई भासा बोलम, हम्मर समझ से ई उनका सोभा न देवत। मगध के पुराना इतिहास अपने जानऽ ही अध्यच्छ महोदय, बहुत ही गौरवमय इतिहास रहल हे। मगध के भासा सउँसे भारत के भासा के जननी रहल हे। अत: अप्पन परस्ताव ऊ वापस लेवे के किरपा करथ। ई संबंध में विचार करल जायत। ई हम उनका आस्वासन दे ही।

श्री रामईश्वर सिंह : अगर मैथिली आउ भोजपुरी के मान्यता न मिलल

होयत हल तऽ हम अप्पन परस्ताव सहर्स Withdraw कर लेती हल। अपने एकरो भोजपुरी, मैथिली नियर पाठ्यक्रम में लागू करी। हमरा वापस लेवे के request न करी। एकरा मान लेवे में सरकार के दिक्कत नयँ हेवे। सरकार एकरा पर विचार फिन से करे आउ कन्सीडर करे। एकरा reject मत करी।

डॉ० राम राज प्रसाद सिंह (मंत्री) : एकरा रिजेक्ट न करल जा रहल हे। सोध कार्ज ला पइसा देवल जाय। कुछ करल जायत। ई भासा के साथ लोग मगही में थीसिस देलन हे। एकरा समृद्धसाली बनावीं। सरकार एकरा पर विचार करत कि एकरा पाठ्यक्रम में रखल जायत। ई पाठ्यक्रम में रखे लायक बोली बनत इया नयाँ, एकरा पर सरकार विचार करत।

श्री रामईश्वर सिंह : जब सरकार के आस्वासन हो गेल कि जइसन दूसर क्षेत्रीय भासा के मान्यता देवल जा रहल हे, एकरो ला सब्भे कार्रवाई करल जायत, तऽ हम मंत्री महोदय के ई अस्वासन पर सहर्स withdraw करेके अनुमति सदन से चाहऽ ही।

बिहार विधान परिषद में मगही (11-7-1979)

(मगही अकादमी आन्दोलन)

श्रीमती कमला सिन्हा : सदस्य विधान परिषद के जरिये फलस्वरुप अनसन से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में सरकार के धेयान आकृस्ट करल गेल ।

श्रीमती कमला सिन्हा : उपसभापति महोदय दैनिक आर्यावर्त दिनांक 9-7-1979 के सुबह वाला संस्करन के पेज संख्या 6,कालम 6पर छपल ''मगही अकादमी ला अनसन जारी '' के संबंध में आज 14 वॉ दिन हे । भारतीय भासा के अन्तर्गत मगही एगो सम्पूर्ण (भरलपुरल) भासा हे । ई बिहार राज्य के ।। जिला में पूर्नत: (पूरा तौर से) आउ 5 जिला में अंसत: (आंसिक रूप से) बोलल जा हे । लगभग 5 करोड़ के जनसंख्या ई भासा में बोलऽ, समझऽआउ लिखऽ पढ़ऽ हे।

मगध महाजनपद के भासा, संस्कीरती, इतिहास आउ कला के सुरच्छित रखे आउ एकरा पल्लवित आउ पोसित करेला एगो अकादमी संस्था नितांत आवस्यक हे ।

हियॉ ई उल्लेख करे जुगत हे कि महामहिम राज्यपाल बिहार विधान मडल के संजुक्त अधिवेसन राज्य के भावी कार्जक्रम के सम्बन्ध में अप्पन अभिभासन में ई कहलन हल कि आगामी वित्तीय बरिस मे मगही अकादमी के स्थापना करल

जायत । भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर राज्यपाल के अभिभासन पर मौजूद धन्यवाद परस्ताव पर घोसना करलन हल कि सरकार चालू वित्तीय बरिस में मगही अकादमी के स्थापना करत । बाकि ई नय भेल । परतिच्छा काल निरासाजनक परिनाम लेके आयल हे आउ सरकारी उपेच्छा असह्य हो गेल हे । ई धरना अनसन कार्जक्रम ओकरे परिनाम हे । हम चाहऽही कि सरकार ई सम्बन्ध में एगो स्पस्ट वक्तव्य देवे ।

ठाकुर मुनेश्वर नाथ सिंह (मंत्री) : ई पर सरकार के वक्तव्य 16-7-1979 के होवत ।

श्रीमती कमला सिन्हा : सदस्य विधान परिसद के भारतीय भासा के अन्तर्गत मगही अकादमी के स्थापना में विलम्ब से उत्पन्न स्थिति से संबंधित ध्यानाकर्सन पर सरकार के वक्तव्य :—

श्री चन्द्रशेखर सिंह (मंत्री) : ई सम्बन्ध में स्थिति ई हे कि चालू वित्तीय बरिस में मगही अकादमी के स्थापना ला निधि के उपबंध करल जा चुकल हे । औपचारिकता जथासीघ्र पूरा करेला कार्रवाई करल जा रहल हे । आसा हे ई साल मगही अकादमी के स्थापना हो जायत ।

श्री बाबू लाल मधुकर : हम जानना चाहऽही कि मगही अकादमी के स्थापना के जे आस्वासन सरकार देलक हे ओकर तारीख का होवत ? एकरा ला जे आमरन अनसन पर कुछ लोग बइठल हथ उनका संतुस्ट करित सरकार उनकर अनसन भंग करवा दे ।

श्री चन्द्रशेखर सिंह (मंत्री) : जब हम अप्पन उत्तर में ही कहली कि ई चालू वित्तीय बरिस में हो जायत तऽ फिन तारीख के घोसना करेके का जरूरत हे, ओकरे में तिथि निहित हे ।

श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर : जइसन कि मंत्री महोदय कहलन कि ई साल मगही अकादमी के स्थापना हो जायत तऽहम मंत्री महोदय से आग्रह करम कि जब अपने सबकुछ करे जा रहली हे तऽ काहे न जे लोग एकरा ला भूख हड़ताल पर बइठल हथ उनका संतुस्ट करित भूख हड़ताल समाप्त करवावऽ ही ।

श्री चन्द्रशेखर सिंह (मंत्री) : हम ऊ लोग से निस्वित रुप से अपील करम कि ऊ अप्पन भूख हड़ताल वापस ले लेथ ।

(अन्तराल के बाद अध्यासीन सदस्य श्री वसी अहमद आसन गरहन कइलन।)

सदन के बाहर आन्दोलन

भोजपुरी आउ मैथिली के राज्य सरकार अकादमी बनयले हल बाकि मगही के अकादमी नय हल। ई लेले मगही साहित्यकार कलाकार परिवार के धेयान ई मुद्दा पर गेल। 10 जून 1997 के पटना गाँधी मैदान में विराट मगही सम्मेलन के आयोजन भेल। 1979 से बेली रोड, पटना के हड़ताली मोड़ पर धरना अनसन के कार्यक्रम चलावेला तय भेल। सतीश कुमार मिश्र मगही अकादमी आंदोलन के संयोजक बनावल गेलन। मीडिया में परचार के भार हरीन्द्र विद्यार्थी के सौंपल गेल।

27 जून 1979 के हड़ताली चौक, बेलीरोड, पटना में मगहिया लोग जुटे लगलन। सतीश कुमार मिश्र, रंजन कुमार मिश्र, हरीन्द्र विद्यार्थी, घमंडी राम, जवाहरलाल उषा, कुमारी राधा, रामनरेश पाठक, श्याम नारायण पटेल, पत्रकार संजय कुमार, श्री नंदन शास्त्री, रामबुझावन सिंह, सम्पत्ति अर्याणी, मिथिलेश, शेखर, जयराम सिंह, राम नरेश प्रसाद वर्मा, मणिलाल आत्मज, राम पुकार सिंह राठौर, रामचन्द्र शर्मा किशोर, वीरेन्द्र प्रसाद सिंह वगैरह धरना स्थल के आकर्सन के केन्द्र बनलन। भोजपुरी भासी पंडित रामदयाल पांडेय उहाँ आके समर्थन देलन। धरना के कार्यक्रम 27 जून 1979 से 16 जुलाई 1979 तक चलल।

पहिला दिन रंजन कुमार मिश्र, दूसरा दिन घमंडी राम, तेसर दिन जवाहर लाल, रामनरेश पाठक, कुमारी राधा वइठलन। 4 जुलाई के श्रीनन्दन शास्त्री, हरीन्द्र विद्यार्थी, बाबूलाल मधुकर प्रो० रामबुझावन सिंह अनसन पर बइठलन। 16 जुलाई 1979 के बिहार सरकार के मंत्री श्रीन्द्रशेखर सिंह मगही अकादमी बनावे के घोसना विधान परिषद में कइलन। एकरा में श्री कमल नाथ सिंह ठाकुर, श्रीमती कमला सिन्हा आउ बाबूलाल मधुकर के अहम् भूमिका रहल। मंत्री ठाकुर मुनेश्वर सिंह हड़ताली चौक अवस्थित धरना स्थल पर अयलन आउ अनसनकारी हरिनंदन मिश्र किसलय के नींबू पानी पिला के अनसन तोड़वयलन। अप्रील 1981 में सरकार मगही अकादमी, बिहार के गठन कयलक।

विधान सभा में मगही (11.08.2006)

25—श्री राम सुन्दर कनौजिया : अध्यच्छ महोदय, हम परस्ताव करऽ ही कि— "ई सभा राज्य सरकार से अभिस्ताव करऽ हे कि मगही भाषा के विकास ला एकरा संविधान के अठमा सूची में सामिल करेला केन्द्र सरकार से सिफारिस करे।"

श्री विजेन्द्र प्रसाद यादव, मंत्री : महोदय, सरकार के कोई आपत्ति नयँ हे। सब्भे भासा फूले-फले, ई पुराना भासा हे, ई से सरकार के कोई आपत्ति नयँ हे। जल्दिए केन्द्र सरकार से अनुसंसा कर देवल जायत।

अध्यच्छ : हम परस्ताव करऽ ही कि :—

"ई सभा राज्य सरकार से अभिस्ताव करऽ हे कि मगही भासा के विकास ला, एकरा संविधान के अठमा अनुसूची में सामिल करेला केन्द्र सरकार से सिफारिस करे।"

ई परस्ताव स्वीकृत भेल।

ई संकल्प स्वीकृत भेल।

बिहार विधान परिषद् (12-12-2006)

अध्यासीन सदस्य (श्री तनवीर हसन) : माननीय सदस्य, श्री मुन्द्रिका सिंह यादव।

श्री मुन्द्रिका सिंह यादव : माननीय सभापति महोदय, ई बिहार विधान परिषद् राज्य सरकार से अभिस्ताव करऽ हे कि ऊ "मगही भासा के संविधान के अठमा अनुसूची में सामिल करे हेतु केन्द्र सरकार से सिफारिस करे"।

महोदय, कउनो सभ्य समाज के एगो भासा होवऽ हे आउ ऊ समाज, देस आउ परदेस समृद्ध मानल जा हे, जेकर समृद्ध भासा होवऽ हे। महोदय, मगही भासा मागधी से बनल हे, केवल एही नयँ महोदय, जेतना भी क्षेत्रीय भासा हे, चाहे ऊ मैथिली होय, भोजपुरी होय, बज्जिका होय, अंगिका होय, ई सब्भे क्षेत्रीय भासा महोदय मगध, मागधी भासा के कोख से ही पैदा लेलक हे। महोदय आउ इन सबन में ई जे मगही भासा हे नहोदय सबसे पुराना भासा हे, एकर गौरवमय इतिहास रहल हे। महोदय, ई बुद्धकालीन भासा हे महोदय, बुद्ध आउ महावीर के जमाना के भासा

रहल हे। महोदय आउ एकरा पीछे वाला जे भासा बनल महोदय चाहे भोजपुरी हो इया मैथिली होय महोदय, इनका संविधान के अठमा सूची में सामिल कर लेवल गेल महोदय। पीछे के अइसन भासा के महोदय मान्यता देवल गेल, परमुखता देवल गेल, बाकि अबतक बेचारी मगही पिछड़ रहल हे, जबकि करोड़ो लोगिन के ई लोकप्रिय जुबान हे महोदय, भासा हे महोदय। ई से बड़ी विनम्र भाव से सदन के माध्यम से, आसन के माध्यम से सरकार से हम आग्रह करना चाहऽ ही कि अइसन पुराना समृद्ध, लोकप्रिय जउन भासा के इस्तेमाल महोदय करोड़ो लोगिन खालो मगध के लोग ही नयँ, एकर बाहर एकरा लोग इस्तेमाल करऽ हथ आउ एक जमाना जब मगध राज्य रहल हल तऽ पूरा एकर इलाका फइलल रहल हल। महोदय ई से हम सरकार से अनुरोध करना चाहऽ ही कि अइसन भासा के संविधान के अठमा अनुसूची में सामिल करेला, जइसन कि मैथिली के करल गेल, जइसन कि भोजपुरी के करल गेल, मगही के सामिल करेला जोरदार सिफारिस करे।

अध्यासीन सदस्य (डा० तनवीर हसन) : माननीय मंत्री, गृह बिसेस।

श्री वैद्यनाथ महतो (मंत्री) : महोदय, बिहार विधान सभा से पिछला सत्र में माननीय सदस्य बिहार विधान सभा श्री रामसुंदर राम कनौजिया के गैर-सरकारी संकल्प संख्या–13, 2006 के दिनांक 11.8.2006 के सभा में वाद-विवाद के दौरान सभा द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृत करल गेल हल। ई पर बिहार विधान सभा के पत्रांक-1627, दिनांक 25.8.2006 द्वारा स्वीकृत करके गैर-सरकारी संकल्प आवस्यक कार्रवाई ला प्राप्त होल जेकर आलोक में कार्रवाई करल जा रहल हे। एकरा में माननीय.....।

श्री मुन्द्रिका सिंह यादव : ऊ सदन से तो भेजले गेल। ई सदन से भी ओकरा भेजल जाय ताकि ओकरा आउ बलवती (बल) मिले।

श्री वैद्यनाथ प्रसाद महतो (मंत्री) : कार्रवाई हो रहल हे ई से अपने से आगरह हे कि वापस ले लीं।

श्री मुन्द्रिका सिंह यादव : महोदय, पारित हो गेल, सर्वसम्मति से पारित हो गेल, पारित कर देवल जाय महोदय, एकरा सक्ति देवेला.....

श्री नवल किशोर यादव : विधान सभा से हो गेल, इहाँ से भी पारित हो गेल.....

श्री मुन्द्रिका सिंह यादव : एकरा सक्ति देवेला, बल देवेला, ई सदन से भी पारित करल जाय महोदय.....

श्री मुद्रिका सिंह यादव : हुआँ से भेजल गेल हे, ई सदन से भी भेजल जाय आउ...

श्री वैद्यनाथ प्रसाद महतो (मंत्री) : विधान सभा से हो गेल हे, हो ही जायत।

श्री नवल किशोर यादव : विधान सभा से हो गेल हे, इहाँ से भी हो जाय.....।

अध्यासीन सदस्य (डॉ० तनवीर हसन) : संकल्प के पच्छ में बहुमत हे, परस्ताव पारित होल।

अभ्यास के सवाल :

1. मगही के विकास में रामईश्वर सिंह एम.एल.सी. के भूमिका पर परकास डालऽ।
2. 1974 में विधान परिसद में मगही के विकास ला कउन-कउन नेता परयास कइलन?
3. मगही अकादमी आंदोलन के संच्छेप में बरनन करऽ।
4. मगही के संविधान के अस्टम अनुसूची में लावेला विधानमंडल में 2006 में का परयास भेल ?

●●●

अकासवानी में मगही

अकासवानी पटना से मैथिली के 'भारती' आउ भोजपुरी के 'आरती' के जरिये कार्जकरम के परसारन हो रहल हल बाकि मगही ला कोई कार्जकरम न हल । मगही के परिचित गीतकार सुदर्शन शांडिल्य के निधन 16-1-78 के हो गेल । सतीश कुमार मिश्र के काफी परयास के बावजूद आकासवानी ई दुखद समाचार के परसारन ला तइयार न भेल । तय भेल कि मगही अंदोलन तेज करेला अखबार निकालल जाए। नाम रखायल मगही समाचार । 26 जनवरी 1978 के एकर लोकार्पन भेल । मगही समाचार के परचारपरसार के जिम्मा घमंडी राम संभाललन । निरनय लेवल गेल अकासवानी पटना के गेट पर धरना देवेला । 1-2-1978 के अकासवानी पटना के गेटपर धरना सुरू भेल । कवि सिल्पी सुरेन्द्र एक दिवसीय धरना पर बइठलन । मुददा हल मगही के स्वतंत्र परसारन। अखबार में समाचार भेजेला हरीन्द्र विद्यार्थी के नाम तय भेल । 26-1-78 के ही मगही साहित्यकार कलाकार परिवार नाम के संस्था के गठन हो गेल हल । अकासवानी पटना के केन्द्र निदेसक के प्रतिनिधि डा० चतुर्भुज के ज्ञापन सौपल गेल । प्रतिनिधि मंडल में सतीश कुमार मिश्र, राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी , हरीन्द्र विद्यार्थी, देवेन्द्र कुमार दत्त, अजयकांत शर्मा आदि सामिल भेलन। दिल्ली जाके सतीश कुमार मिश्र, राम पुकार सिंह राठौर आउ शिल्पी सुरेन्द्र सांसद शुकदेव प्रसाद वर्मा, सांसद ईश्वर चौधरी, सूचना प्रसारण मंत्री लाल कृष्ण आडवाणी तथा पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गॉधी से मिललन । आडवाणी जी आउ श्रीमति गॉधी छौ महीना इन्तजार करेला कहलन । जब इंतजार के समय बीत गेल तऽ 21-11-1978 के पटना रेडियो स्टेसन के गेट पर फिन धरना सुरू भेल । पहिला दिन शिल्पी सुरेन्द्र, दुसरका दिन प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा आउ तिसरका दिन नागेन्द्र धरना पर अनसन कइलन । परमानन्द दोषी भी धरना में भाग लेलन। बाकि केन्द्र निदेसक एन० के० सिकदर टस से मस न भेलन । 23 नवम्बर के स्थिति तनावपूर्न हो गेल। आंदोलन के संयोजक कहलन कि अगर 24 तक हक में फैसला न भेल तऽ 25 नवम्बर के गेट जाम कर देवल जात । 24 नवम्बर के कन्हैया लाल मेहरवार धरना पर बइठलन । उनका माला पेन्हावल गेल । सिकदर जी धरना स्थल पर आके मेहवार जी के नीबू पानी पीला के

अनसन तोड़वयलन। मगही परसारन के घोसना केन्द्र निदेशक एन .के. सिकदर कैलन। जनवरी से मागधी परसारन सुरू भेल । 3-1-1979 से एक दिन आउ 25-5-1979 से सप्ताह में दू दिन मागधी कार्यकरम के तहत मगही परसारन सुरू भेल । अकासवानी से मगही परसारन के आंदोलन में सतीश कुमार मिश्र, हरीन्द्र विद्यार्थी, घमंडीराम, शिल्पी सुरेन्द्र, रंजन कुमार मिश्र, राम नरेश पाठक, कुमारी राधा, प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा, राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी, निर्मल नागेन्द्र, राम पुकार सिंह राठौर, अजयकांत शर्मा, देवेन्द्र कुमार दत्त, कन्हैया लाल मेहवार, विजय नंदन प्रसाद, बाबू लाल मधुकर, श्री नंदन शास्त्री, जवाहर लाल, रामचंद्र शर्मा किशोर आदि के जोरदार भूमिका रहल । राजनेता शंकर दयाल सिंह, रामपृत पासवान आउ गुणानंद ठाकुर भी धरना स्थल पर अप्पन उपस्थिति दर्ज करवैलन । इनका अलावे राम गोपाल शर्मा रुद्र आउ केसरी कुमार भी सामिल भेलन । परसारन के घोसना के खुसी में संगीत सुषमा, पटना के कार्यालय में एगो गोस्ठी भेलक जेकरा में सत्यदेव नारायण अस्थाना, राम नरेश पाठक, तृप्ति नारायण शर्मा, मृत्युंजय मिश्र करुणेश, शिल्पी सुरेन्द्र, राम पुकार सिंह राठौर, निर्मल नागेन्द्र, विजय नंदन प्रसाद, कुमारी राधा, सीताराम यादव, हरीन्द्र विद्यार्थी, विजय कुमार, पशुपति सिंह, सरयु प्रसाद, सुरेन्द्र निर्द्वन्द्व, रघुनाथ प्रसाद विकल, यदुनंदन प्रसाद सिंह आउ रत्नेश्वर प्रसाद सामिल भेलन ।

अभ्यास के सवाल :

1. अकासवानी में मगही के स्थान कइसे मिलल ?

●●●

दूरदर्सन पर मगही

13 मार्च 1992 के मगही साहित्यकार कलाकार परिवार के तरफ से अखबार में हरीन्द्र विद्यार्थी के बेयान छपल कि पटना दूरदर्सन द्वारा मगही भासा के साथ सौतेला व्यवहार करल जाइत हे । लोक गीत के कार्जक्रम में जाट्-जाटिन गीत के परसारन भोजपुरी गीत कहके कैल गेल , जे मगही भासा के साथ घोर अन्याय हे । काहेकि जाट-जाटिन के जउन गीत परसारित होयल से मगही भासा में हल ।

12 नवम्बर 1992 के अखबार में समाचार आयल कि पटना दूरदर्सन के द्वारा मगही भासा के साथ घोर अन्याय हो रहल हे जे अब बरदास्त न कैल जायत । मगही साहित्यकार कलाकार परिवार के तरफ से दूरदर्शन के गेट पर धरना देवे के धमकी देवल गेल ।

15 अक्टूबर 1993 के मगही साहित्य सम्मेलन बिहार आउ मगही अकादमी गया द्वारा संयुक्त रूप सें पटना दूरदर्सन के गेट पर धरना देवल गेल । प्रमुख मांग हल कि पटना दूरदर्सन से मगही भासा में साहित्यिक आउ सांस्कृतिक कार्यक्रम परसारित कैल जाय । एकरा अलावे पटना दूरदर्शन आउ आकाशवाणी पटना से मगही में नियमित रूप से समाचार भी परसारित कैल जाय । साथे-साथे आउ मांग भी रखल गेल हल जेकरा में प्रमुख हल विश्वविद्यालय मे मगही में स्नातकोत्तर विभाग खुले, भारतीय संविधान के अठवॉ अनुसूची में मगही के सामिल कैल जाय आउ साहित्य अकादमी दिल्ली मगही के भासा के रूप में मान्यता देवे । दूरदर्सन के परवेस द्वार पर दिन भर धरना चलल जेकर नेतृत्व कैलन डा० राम प्रसाद सिंह, हरीन्द्र विद्यार्थी, अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, केशव प्रसाद वर्मा, महेन्द्र प्रसाद देहाती आउ डा० सम्पति अयार्णी । ई धरना में दिलीप कुमार, राम विलास रजकण, राम पारिख आउ हरिदास ज्वाल भी सामिल होयलन।

साफ के दूरदर्सन के प्रभारी निदेशक ए.के. विश्वास के एगो ग्यापन देवल गेल। डिस्टमंडल के ऊ भरोसा दिलयलन कि उनकर मांग पर उचित काररवाई करेला केन्द्र सरकार के पास लिखल जायत । परिनाम ई भेल कि 1993 में ही दूरदर्सन के उपनिदेशक पी. के. पटेल बिहारी लोकभासा के कवि-सम्मेलन के दूरदर्सन पर परसारन करवैलन, जेकरा में मगही के अलावे मैथिली आउ भोजपुरी कविता के भी स्थान देवल गेल।

मगही आउ अन्य बिहारी लोकभासा के पटना दूरदर्सन से परसारन ला· तीस दिसम्बर 1998 के जनवादी लेखक संघ पटना जिला शाखा के साहित्यकार लोग पटना दूरदर्सन के केन्द्र निदेसक से मिललन । सिस्टमंडल के सदस्य हलन हरीन्द्र विद्यार्थी, डा० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, राम बिनय सिंह विनय, राम गोविन्द यादव, राम पुकार कुशवाहा, श्रीकांत व्यास। अजय रश्मि गुप्ता आउ पी. के. झा दूरदर्सन के तरफ से वार्त्ता में भाग लेलन । एगो सात सूत्री मांग-पत्र देवल गेल जेकरा में परमुख हल—महीना में एगो कवि गोस्ठी, लोक साहित्य के सब विधा के कार्यक्रम, मगध क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थल के दर्सन आउ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समाचार । दूरदर्सन के तरफ से मांग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करे के आस्वासन मिलल ।

लोकभासा विकास मंच के महासचिव हरीन्द्र विद्यार्थी पटना दूरदर्सन द्वारा बिहार के लोकभासा के उपेच्छा के आरोप लगयलन । एकरा ला 22-12-1999 के एगो प्रतिनिधि परमंडल अप्पन छौ सूत्री मांग के समर्थन में पटना दूरदर्सन के उप-निदेसक प्रहलाद पटेल से मिलल । प्रतिनिधि मंडल में महासचिव के अलावे चन्द्र प्रकाश माया, श्रीकान्त व्यास आउ घमंडी राम सामिल हलन । मांग रखल गेल कि मगही मैथिली, भोजपुरी अंगिका आउ बज्जिका के कार्यक्रम के दूरदर्सन पर स्वतंत्र परसारन कैल जाय । लोकभासा कविगोस्ठी के परसारन नियमित रूप से होवे । साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधि के छायांकन आउ परसारन होवे । लोक साहित्य के नाम पर फूहड़ सिरियल पर रोक लगे । बनावटी के जगह मौलिक चीज देखावल जाय । बिहार के पर्यटन स्थल के इतिहास के साथ छायांकान आउ परसारन होवे । बिहार के संस्कृति के रच्छा होवे आउ कलाकार लोग के उचित पारिश्रमिक देवल जाय ।

19 जनवरी 2000 ई. के लोकभासा विकास मंच द्वारा प्रधान मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, दूरदर्सन महानिदेसक के पास अलग-अलग पत्र लिखके लोकभासा मगही मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका आदि के उपेच्छा से संबंधित छौ सूत्री मांग के समर्थन में ग्यापन भेजल गेल । ग्यापन पर हस्ताच्छर कैलन हरीन्द्र विद्यार्थी, विजय गुंजन, चन्द्र प्रकाश माया, श्रीकान्त व्यास, बी. एन. विश्वकर्मा, घमंडी राम आउ चन्द्रावती चन्दन ।

अभ्यास के सवाल :

1. दूरदर्सन पर मगही के स्थिति बतलावऽ ।

●●●

मगही के पत्र—पतरिका

आजकल मगही में अनेक पत्र-पतरिका परकासित हो रहल हे जेकरा में त्रैमासिक सोध पतरिका से लेके सप्ताहिक समाचार-पत्र तक सामिल हे। पाठक के जानकारी के वास्ते अबतक परकासित मगही पत्र-पतरिका के सूची इहाँ प्रस्तुत हे :—

1. मगध समाचार -1880 गया, सं० अखौरी शिवनन्दन प्रसाद
2. मगही भाई (मासिक)-1880 के आस-पास, सं० अखौरी शिवनन्दन प्रसाद
3. तरुण तपस्वी-1945 के आस-पास, सं श्रीकान्त शास्त्री, हिलसा , एकंगरसराय
4. मागधी (त्रैमासिक)-सं० श्रीकान्त शास्त्री, एकंगरसराय
5. मगही-1954, सं० श्रीकान्त शास्त्री, शिवराम योगी
6. महान मगध (1955-56)-सं० गोपाल मिश्र केसरी, औरंगाबाद
7. बिहान (मासिक)-1958, सं० श्रीकान्त शास्त्री, डा.रामनन्दन, सुरेश दूबे सरस (100 से जादे अंक)
8. मगही सनेस (मासिक)-सं० राम खेलावन शर्मा, नालन्दा
9. सरहलोक-सं० प्यारे सिन्हा परेश, पटना
10. सुजाता (मासिक)-1967, सं० बाबूलाल मधुकर, अखिल भारतीय मगही मण्डल, पटना
11. भोर- 1968, सं० आशुतोष कुमार चौधरी, नंद किशोर सिह, जमशेदपुर
12. सारथी (त्रैमासिक)- 1971, सं० मथुरा प्रसाद नवीन, मिथिलेश, दयानन्द बटोही, राम खेलावन प्रसाद, वारिसलीगंज
13. मगही लोक-1977, सं० डा० राम प्रसाद सिंह, परकासक-मगही अकादमी, गया
14. मगही समाचार (साप्ताहिक) 1978, सम्पादक-सतोश कुमार मिश्र, पटना प्रेस, यारपुर पटना
15. भोर- 1978, सं० संत राम नगीना सिंह 'मगहिया', योगेश्वर प्रसाद सिंह, मगही मण्डल, बिक्रम, पटना

16. मगधाग्नि-स० सतीश कुमार मिश्र, गया
17. मगही समाज (1979)- सं० डा० राम प्रसाद सिंह, परकासक-मगही अकादमी, गया (50 से जादे अंक)
18. कोंपल- 1979 सं० जटाधारी मिश्र, राँची
19. मांजर-सं. डा० लक्ष्मण प्रसाद 'चन्द', बाँके बिहारी वियोगी, बिहार शरीफ, (1980)
20. मागधी-1980, सं० योगश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश'
21. निरंजना-1983, सं० केसरी कुमार, मगही अकादमी पटना
22. गौतम (त्रैमासिक)-1983, सं० प्रो. श्यामनन्दन शास्त्री हंसराज, भारतीय मगही मण्डल, बिक्रम (पटना)
23. पनसोखा- 1986, सं० आशुतोष कुमार चौधरी, जमशेदपुर
24. च्यवानांचल-1987 (त्रैमासिक) सं० डा० सूर्यदेव सिंह
25. पाटलि (मासिक)- 1989, सं० केशव प्रसाद वर्मा, अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, दिलीप कुमार, अछुआ, पटना
26. कचनार (त्रैमासिक)- 1992, सं० विश्वनाथ, विष्णुपद मार्ग, कासिल्की, गया
27. मगह के हुंकार (मासिक)- 1994, सं० सुशील रंजन, परकासक- प्रगतिशील मगही समाज, पटना
28. अलका मागधी (मासिक)- 1995, सं० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, परकासक नन्दा मौर्य, पुराना जक्कनपुर,पटना-1 (लगातार नियमित रूप से 135 अंक, अभी भी परकासन जारी)
29. अँकुर (मगही मासिक)- 1996, सं० जनार्दन मिश्र जलज, पटना।
30. मगधांचल- तिमाही, 1998 सं० अलखदेव प्रसाद अचल, पंचरुखिया, औरंगाबाद
31. मगहिया भारती (तिमाही)- 1998, सं० डा० राम गोपाल पाण्डेय, महाबलीपुर, पालीगंज, पटना
32. अखरा-1998 सं० डा० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', मगही प्रचारणी सभा, गया
33. मगधवाणी- 1998 सं० सुखित वर्मा, लोक साहित्य मंदिर बादीपुर, पटना।
34. मगधभूमि (त्रैमासिक)-सं० डा० उमाशंकर सिंह 'सुमन', मगही विकास मंच, जहानाबाद

35. टोला-टाटी (मासिक)-सं० सुमन्त, गया (75 से जादे अंक)
36. सिरजन- सं सत्येन्द्र कुमार (2008)
37. सारथी-सं० मिथिलेश, नरेन।

अभ्यास के सवाल :

1. मगही के पत्र-पतरिका के हलात पर परकास डालऽ।

●●●

मगही में होयल सोध के काम

हम्मर जानकारी में अबतक मगही भासा आउ साहित्य आदि पर 72 सोधपरक काम हो चुकल हे आउ सोधकर्त्ता के डिग्री भी मिल गेल हे। एतने न, जहाँ-तहाँ लगभग 30 लोग अप्पन सोध परबंध तइयार करे में जुटल हथ।

सोधकर्त्ता के विसय आउ सोधकर्त्ता के नाम–

1. मगही भाषा और साहित्य- डा० सम्पत्ति अर्याणी (डी . लिट्)
2. बिहारी भाषाओं की उत्पति और विकास- डा० नलिनी मोहन सान्याल
3. मगही अर्थ विज्ञान का विश्लेषणात्मक निर्वचन- डा० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन'
4. पटना और गया जिले में बोली जानेवाली मगही भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन—डा० श्रीकान्त मिश्र (शास्त्री)-
5. पद विज्ञान की दृष्टि से मगही और भोजपुरी का तुलनात्मक अध्ययन-डा० लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा
6. मगही भाषा—डा० युगेश्वर प्रसाद
7. परिनिष्ठित मगही भाषा का वैज्ञानिक सर्वेक्षण-डा० कृष्ण नारायण
8. मगही और हिन्दी की व्याकरणिक कोटियों का तुलनात्मक अध्ययन-डा० सरोज कुमार त्रिपाठी
9. लोकगाथाओं की परम्परा में मगही लोरिकायन में लोकतात्विक मूल्य- डा० सविता कुमारी सिन्हा
10. मागधी बोली का स्वर विज्ञान और रूप विधान-डा० एस. पी. सिन्हा
11. मगही ध्वनिशास्त्र का वर्णनात्मक अध्ययन- डा० सरयू प्रसाद
12. पूर्वी तथा बिहारी बोलियों की व्याकरणिक कोटियों का तुलनात्मक अध्ययन- डा० केशव प्रसाद त्रिपाठी
13. मगही की कृषि-सम्बन्धी शब्दावली- डा० शशिबाला

14. मगही की व्यावसायिक शब्दावली-डा० नरेश प्रसाद वर्मा
15. पटना की व्यावसायिक शब्दावली-डा० कृष्णनन्दन प्रसाद
16. औरंगाबाद की मगही- डा० सुरेन्द्र प्रसाद
17. पूर्वी मगही एवं मानक मगही के शब्दरूप-डा० शीला करकेटा
18. मगही की संयुक्त क्रियाओं का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन-डा० कुमार इन्द्रदेव प्रसाद
19. मगही क्रियापदों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन-डा० उमेश चन्द्र मिश्र
20. मगही भाषा की क्रिया संरचना का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन-डा० शीला वर्मा
21. मगही के संज्ञापद-डा० इलबीस मूर्तजा
22. सिद्धों की काव्य-भाषा का अध्ययन-डा० किशोरी लाल वर्मा
23. उत्तर मुँगेर की बोली : भाषा-शास्त्रीय अध्ययन-डा० हरि नारायण मिश्र
24. प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन-डा० त्रिभुवन ओझा
25. मगही की कृषक एवं ग्रामोद्योग शब्दावली-डा० शिवरानी
26. मगही कहावतों का समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अनुशीलन-डा० रामानुग्रह शर्मा
27. मगही कहावतो का विश्लेषणात्मक अध्ययन-डा० जगदीश प्रसाद
28. मगही पहेलियों का अध्ययन-डा० राजेन्द्र प्रसाद
29. मगही सूक्तियाँ : एक अनुशीलन-डा० चक्रधर शर्मा
30. मगही के विविध रूपों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन-डा०अवध बिहारी पाठक
31. मगही काव्यों के आधार पर निर्मित मगही काव्यशास्त्र का स्वरूप- डा० रामचन्द्र मिश्र
32. मगही गीतों का आलोचनात्मक अध्ययन-डा० कल्याणेश्वरी वर्मा
33. मगही लोकगीतों में प्रेम की अभिव्यंजना- डा० वैद्यनाथ शर्मा
34. मगही लोकगीतों में अभिव्यक्त लोकजीवन- डा० शालिग्राम मिश्र 'निराला'
35. मगही लोकगीतों में शृंगार रस- डा० योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश'

36. आधुनिक मगही गीत-डा० भरत सिंह
37. मगही ऋतुगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन-डा० दशई
38. मगही लोककथाओं का अध्ययन-डा० नागेश्वर शर्मा
39. मगही लोककथाओं का लोकतात्विक अध्ययन-डा० राम प्रसाद सिंह
40. मगही लोककथाओं का सांस्कृतिक मूल्यांकन- डा०असीम बनर्जी
41. मगही लोककथाओं का अध्ययन-डा० कैलाश प्रसाद
42. मगही उपन्यास: उद्भव और विकास- डा० राजनन्दन प्रसाद 'राजन'
43. आधुनिक मगही कहानी साहित्य का अनुशीलन-डा० लक्षमण प्रसाद
44. मगही लोरिकायन का समाजशास्त्रीय अध्ययन-डा०कृष्णनन्दन यादव
45. मगही लोकनाट्य का उद्भव और विकास-डा० ब्रजनन्दन प्रसाद
46. मगही दशकूटक:एक अध्ययन-डा०. इन्द्रदेव नारायण
47. मगही काव्य में विरह वर्णन–डा० इन्द्रदेव प्रसाद यादव
48. मगही साहित्य में नारी का स्वरूप- डा० रामचन्द्र प्रसाद सिंह
49. मगही लोकगाथाओं का साहित्यिक अनुशीलन-डा० इनामुल हक
50. मगही भासा के भक्तयात्मक गीत -डा० कृष्णदेव पण्डित
51. पटना जिला में प्रचलित लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन-डा0 शिव शंकर पण्डित
52. मगही लोक साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक तत्व- डा० ब्रजेश कुमार राय
53. मगही कौ भाषा-वैज्ञानिक मीमांसा -डा० कुमार राजीव रंजन
54. मगही एकांकी: एक अनुशीलन- डा० उमाशंकर सिंह
55. मगही लोकगीतों में प्रेम सौन्दर्य-डा० वीणा कुमारी
56. मगही काव्य-साहित्य की आधुनिक प्रवृत्तियाँ-डा० राम गोपाल पाण्डेय
57. जन हरिनाथ पाठक: जीवन और साहित्य- डा० वीर विजय कुमार सिंह
58. गया जनपद की साहित्य-साधना- डा० माधुरी कुमारी
59. आधुनिक मगही काव्य में क्रान्ति की विचारधाराएँ- डा० शशि कुमार

60. मगही भाषा का इतिहास दर्शन (डी. लिट्)- डा० सत्येन्द्र कुमार सिंह
61. मगही पहेलियों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन-डा० शिवराम यादव
62. मगही का राम साहित्य -डा० देवनन्दन प्रसाद
63. मगही साहित्य में लोक विश्वास-डा० राम यतन प्रसाद
64. मगही साहित्य में आर्थिक ढाँचा- डा० लालदेव प्रसाद
65. मगही लोकगाथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन- डा० अजय कुमार
66. मगही लोककथाओं में जनजीवन-डा० सत्यनारायण कुमार सिंह
67. मगही लोककथाओं में लोरिकायन का स्थान-डा० ब्रजनन्दन यादव
68. मगही काव्य में बिम्ब योजना-डा० राम कृष्ण पाण्डेय
69. मगही लोकगाथाओं में राजा गोपीचन्द-डा० साधु यादव
70. मगही लोकगाथाओं का अध्ययन- डा० चन्द्रिका प्रसाद
71. मगही गीतों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण- डा० लक्ष्मण शास्त्री
72. मगही काव्य में बिम्ब-विधान-डा० शेषानन्द मधुकर

अभ्यास के सवाल :

1. मगही में होयल सोध के काम पर संच्छेप में एगो निबंध लिखऽ।

●●●

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA
मुद्रक:- [illegible]